मुम्बई (मलाड)। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चौहान स्पोर्ट्स फिएस्टा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु.कुंती से आध्यात्मिक चर्चा करते हुए।

लॉस एंजिल्स। टाइम इज नाउ फिल्म को आडियन्स चाइज अवार्ड प्राप्त हुआ। अवार्ड प्राप्त करते हुए ब्र.कु.विशाल व ब्र.कु.प्रशांत।

लुधियाना। पंजाब एग्रीकल्चर युनिवर्सिटी के स्टूडेन्ट्स को एंगर मैनेजमेंट विषय पर समझाते हुए ब्र.कु.डॉ.राकेश कपूर।

माउण्टआबू। स्वास्थ्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए डॉ.प्रताप मिढ्डा को अवार्ड देकर सम्मानित करते हुए एसडीएम जितेन्द्र के.सोनी।

ओमशान्ति रिट्रीट सेंटर (गुड़गांव)। फिलीपिंस के राजदूत बेनिटो बी.वलेरिएनो से आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.आशा।

अकोला। महाराष्ट्र के कृषि राज्यमंत्री राधेकृष्ण विखे पाटिल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.प्रमिला तथा ब्र.कु.वैशाली।

होली से जीवन में भरें आध्यात्मिक रंग

जैसे आत्मा के बिना शरीर बेकार हो जाता है वैसे ही आध्यात्मिक अर्थ को समझे बिना त्योहार मनाना भी बेकार ही है, क्योंकि भारत के सभी त्योहार आध्यात्मिक अर्थ को लिए हुए हैं। होली के आध्यात्मिक अर्थ का आधार लेने से ही लोक और परलोक अथवा व्यवहार और परमार्थ दोनों सिद्ध होने हैं।

होली का त्योहार शिवरात्रि के बाद क्यों तथा उसका आध्यात्मिक अर्थ क्या है ?

भारत में जो भी त्योहार मनाए जाते है उनमें एक ज्ञान-युक्त क्रम अथवा सिलसिला भी है। उस क्रम के रहस्य को भी जानना चाहिए। उस क्रम में होली से पहले शिवरात्रि का उत्सव आता है। वह उत्सव परमपिता परमात्मा शिव की याद में मनाया जाता है। जैसे कि ''शिव'' नाम के अर्थ से ही सिद्ध है, परमात्मा शिव का अवतरण मनुष्यों के कल्याणार्थ ही होता है उनके अवतरण से पूर्व मनुष्यों पर पांच विकारों का रंग चढ़ा होता है। सारे संसार में अज्ञान रात्रि छाई होती है। ऐसे समय सत्, चित्, आनन्द स्वरूप परमात्मा शिव आकर अपने 'संग का रंग' अर्थात 'ज्ञान-योग का रंग' मनुष्यात्माओं को देते हैं। इस वृत्तान्त की याद में आज तक शिवरात्रि के बाद होली मनाई जाती है। उपर्युक्त से स्पष्ट है कि ज्ञान के रंग से आत्मा की चोली को रंगना ही वास्तविक होली मनाना है। माया का रंग तो हर एक मनुष्य पर चढ़ा ही हुआ है; अब ईश्वरीय संग के रंग में आत्मा को रंगना ही होली के आध्यात्मिक अर्थ का आधार लेना है। परमात्मा के संग का अथवा ज्ञान का रंग ही वास्तव में हुल्लास देने वाला रंग है, क्योंकि जब परमात्मा ज्ञान रंग लगाते हैं तब आत्मा पवित्र रहने का व्रत लेती है अर्थात पवित्रता की रक्षा करती है। इसलिए होली के बाद रक्षाबन्धन का त्योहार मनाया जाता है।

आजकल होली के दिन छोटे-बड़े सभी मिल कर एक-दूसरे के साथ होली खेलते हैं, यहाँ तक कि जबरदस्ती भी रंग लगाते हैं। वास्तव में लगाना तो चाहिए ज्ञान का रंग परन्तु देह-अभिमानी लोग भौतिकवाद तथा बहिर्मुखता के कारण आध्यात्मिकता को तिलांजली देकर और भौतिक रंग एक दूसरे को बुरी तरह लगा कर इस देश के करोड़ों रूपयों के रंग और कपड़े खराब कर देते हैं। ऐसी होली खेलने का क्या लाभ जिस में खेल ही खेल में अनेक लोगों का दिल दु:खता है और देश का धन भूखों की भूख मिटाने के काम न आकर धूलिया में धूरा जाता है।

आप किस रंग में रंगे हैं?

ज्ञानी और योगी की दृष्टि में तो यह मनुष्य -सृष्टि ही एक विराट खेल है। यह सृष्टि रूपी खेल ''दो-रंगी लीला'' है। इस सृष्टि में दो ही रंग हैं–'एक माया का रंग' और दूसरा 'ईश्वर का रंग'। इस रंगमंच पर हर एक मनुष्य दोनो में से एक न एक रंग में तो रंगता ही है। निस्सन्देह, ईश्वरीय रंग में रंगना श्रेष्ठ होली मनाना है। क्योंकि इस रंग में रंगा हुआ मनुष्य ही योगी है। माया के रंग में रंगा हुआ मनुष्य तो भोगी है। अब हर एक मनुष्य को स्वयं से पूछना चाहिए कि ''मैं किस रंग में रंगा हुआ हूँ; माया के रंग में या ईश्वर के रंग में ? कुसंग के रंग में या सत्संग के रंग में ? ओहो, यदि मैंने ज्ञान-होली न मनाई तो मेरी आत्मा की चोली तो बे-रंगी रह जायेगी। तब मैं आत्मा अपने पिया परमात्मा के घर में जाऊँगी कैसे ? मैं मंगल-मिलन मनाऊंगी कैसे ?

मंगल-मिलन मनाएं

आत्मा का मंगल-मिलन तो परमात्मा ही से हो सकता है क्योंकि मंगलकारी तो एक परमात्मा ही है जिन्हें 'शिव' कहा जाता है। अत: मंगल-मिलन के लिए तो ज्ञान-रंग चाहिए। परन्तु मंगल-मिलन के वास्तविक अर्थ को न जानने के कारण आजकल तो लोग होली के दिन एक-दूसरे पर गुलाल और अबीर डालकर गले मिलते हैं। क्या इसे हम मंगल-मिलन कह सकते हैं? मंगल-मिलन तो तभी हो जब हृदय शुद्ध हो और एक-दूसरे के प्रति द्वेष, ईर्ष्या इत्यादि समाप्त हो और मनुष्य एक-दूसरे को सचमुच भाई-भाई समझकर ऐसे मिलें कि फिर भेदभाव और अमंगल हो ही ना। परन्तु आजकल तो भारतवासी खूब ही होली मना रहे हैं। परन्तु आज व्यवहार में तो लोग जंगल-मिलन ही मना रहे हैं। जैसे जंगल में पशु एक-दूसरे को देखते और मिलते ही एक-दूसरे को हड़प करने की सोचते हैं वैसे ही आज लूट-मार और पशु-वृत्ति मनुष्यों में स्पष्ट दिख रही है। मर्यादा और अनुशासन खत्म हो चुका है और अब तो जंगल का विधान ही लागू है। यह सभी स्थूल रंग से या गुलाल और अबीर से मंगल-मिलन मनाने से थोड़े ही ठीक होगा।

आज इस देश में भाषा भेद, प्रान्त भेद, पार्टी भेद, मत-भेद इत्यादि कितने भेद हैं और उनसे कितने परस्पर सम्बन्ध-विच्छेद हुए हैं। जिस प्रकार ये भेद बढ़ते जाते हैं, उससे तो ऐसा लगता है कि एक दिन खून में होली खेली जायेगी जिसका वर्णन महाभारत में कौरव युद्ध के रूप में आता है। अब आप ही सोचिए कि स्थूल रंग से मंगल-मिलन अथवा होली मनाने का कोई अर्थ है? इसका कोई लाभ है?

होली कैसे मनाएं ?

इसलिए हम कहते हैं कि अब भी समय है कि मनुष्य ज्ञान रंग द्वारा अपने हृदय को प्रभु के रंग में रंग ले। ऐसी होली ईश्वरीय मर्यादा की ही है। स्थूल रंग वाली होली से तो अधिक ही लड़ाई-झगड़ा होता है। छोटे बच्चे बड़ों की पगड़ी उतारते हैं और बड़े भी एक-दूसरे पर कीचड़ उछालते हैं और एक-दूसरे को गाली-गलौच भी देते हैं। ओहो, देखिये आज ऐसे पावन पर्व को लोगों ने कैसे हुल्लड़बाजी का पर्व बना दिया है।

थोड़ा समय पूर्व तक भारत के कई नगरों में यह रिवाज चला आता था कि होली के दिनों में नगरों में देवी-देवताओं के स्वाँग निकलते थे। स्वाँगों के चेहरों पर पाउडर और अबरक लगाकर देवताओं के चेहरों को बड़े सुन्दर और तेजोमय प्रदर्शित करने का यत्न किया जाता था। देवताओं के स्वाँगों के मस्तकों पर भ्रकुटि के स्थान पर छोटे-छोटे बल्ब लगे होते थे जो कि देवताओं की आत्माओं की जागृति के सूचक होते थे। ये स्वाँग नगर के प्रमुख रास्तों से गुजरते थे। इन जलूसों में देवता लोग कहीं-कहीं रास करते हुए भी दिखाये जाते थे। जलूस तथा सवारी में सबसे आगे बैल पर शिव की सवारी होती थी। इस प्रकार होली मनाकर लोग देवताओं की निरोगी काया, तेजोमय आकृति, उल्लासपूर्ण जीवन इत्यादि की झाँकियाँ अपने सामने लाते थे ताकि अपने जीवन के लक्ष्य की झलक आंखों के सामने आ जाये और एक बार फिर अपने पूर्वजों एवं पूज्यों की याद भी आ जाए। ये सवारी अथवा जलूस इन रहस्यों के भी स्मारक थे कि जब परमात्मा शिव इस सृष्टि में आते हैं तो उनके पीछे (बाद) देवी-देवताओं का जमाना आता है। भले ही इस रीति से होली मनायें कि स्वाँगों की बजाय सतयुग के साक्षात देवी-देवताओं का जमाना फिर से लौट आये और सभी की आत्मा बल्ब के समान जग जाये ? वास्तव में ऐसी होली ही तो पारमार्थिक होली है जो कि एक बार खेलने से मनुष्य का जन्म-जन्मान्तर मंगलमय हो जाता है।

होली संगम का त्योहार है

होली का त्योहार कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के संगम की याद दिलाता है क्योंकि तब ही परमपिता परमात्मा शिव ने अवतरित तो कर ज्ञान होली खेली और आत्माओं ने उनके साथ मंगल-मिलन मनाया। हिरण्यकश्यप का वृत्तान्त लाक्षणिक रूप में 'संगम काल' ही पर घटाया जा सकता है। हिरण्यकश्यप के बारे में यह जो बाद प्रसिद्ध है कि उसे वरदान मिला हुआ था कि ''अन्दर मरूं न बाहर, न दिन हो न रात'' वह संगम की याद दिलाता है क्योंकि सतयुग और त्रेतायुग को ब्रह्मा का 'दिन' और द्वापर तथा कलियुग को ब्रह्मा की 'रात्रि' कहते हैं और दोनों के संगम को ''न दिन न रात्रि'' कहा जा सकता है। अत: वर्तमान समय परमपिता परमात्मा से हम प्रैक्टिकल रूप से ज्ञान की होली और मंगल-मिलन मना रहे हैं क्योंकि - शेष पेज 8 पर